वचन का तीर

वाराणसी के चौक बाजार में लक्ष्मी निवास नामक भव्य हवेली के सामने एक बग्घी आकर रुकी। उसमें से एक धनाढ्य सेठ ने उतरकर पूछा–

मुनीम सेठ को हवेली के भीतर एक हाल में ले आया। सेठ लक्ष्मीचन्द ने उठकर उनका स्वागत किया–

तभी सेठ लक्ष्मीचन्द जी का लड़का श्रीपति कालेज से आ गया। उन्होंने फूलचन्दजी से उसका परिचय करवाया–

श्रीपति को गौर से देखते हुए फूलचन्दजी ने कहा–

मुनीम जी की बात सुनकर सब हँसने लगे।

फिर सेठ फूलचन्दजी ने कहा–

तभी फूलचन्दजी मुनीम ने एक बड़ा फोटो निकालकर सेठ लक्ष्मीचन्द के आगे कर दिया। सेठजी बहुत देर तक फोटो देखते रहे। फिर बोले–

सेठ फूलचन्दजी जल पान आदि करके कुछ देर बाद वापस चले गये।

कुछ दिन पश्चात् सेठ लक्ष्मीचन्द ने फूलचन्दजी को अपनी तरफ से विवाह की स्वीकृति भेज दी। शीघ्र ही शुभ मुहूर्त्त में श्रीपति का पाणिग्रहण मोहिनी के साथ हो गया।

शादी के बाद श्रीपति और मोहिनी पहाड़ी स्थानों पर घूमने-फिरने चले गये।

शादी के तीन महीने बीत जाने के बाद एक दिन सेठ लक्ष्मीचन्द ने श्रीपति से कहा–

तभी सेठानी कमला बोली–

श्रीपति ने कहा–